# कृष्णा वैली

## भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

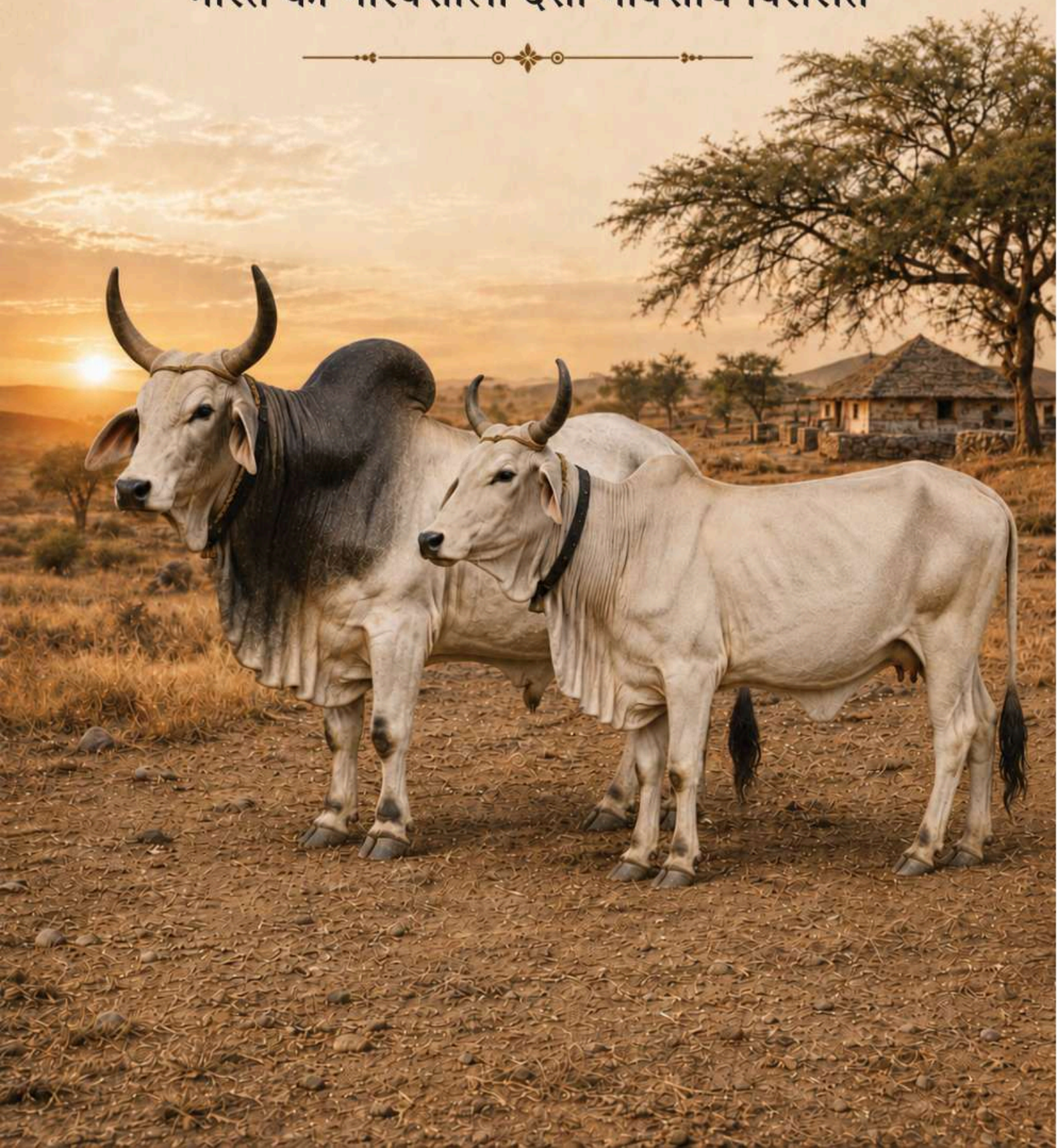

# प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency
लेखक: K. Hewlett
प्रकाशन वर्ष: 1912

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

**अनुवाद संबंधी सूचना**

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

# कृष्णा वैली गोवंश

मूल स्रोत: के. हेवलेट, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भारतीय गोवंश, 1912

## आकार, शक्ति और कार्य-उपयुक्तता

कृष्णा वैली भारत के बड़े आकार वाले गोवंशों में गिनी जाती है। लेखक इन पशुओं को अत्यधिक शक्तिशाली बताता है, किंतु तेज गति के काम या ऊबड़-खाबड़, पथरीली भूमि पर काम के लिए उपयुक्त नहीं मानता। वे विशेष रूप से गहरी, समृद्ध मिट्टी में खेत के काम तथा सड़कों पर भारी और धीमी खिंचाई के लिए उपयुक्त बताए गए हैं।

सड़क पर काम लेते समय उनके खुरों की बहुत सावधानी रखने की आवश्यकता बताई गई है। इसका कारण यह दिया गया है कि वे ऐसे क्षेत्रों में पैदा और पाले जाते हैं जहाँ भूमि नरम और दबने वाली है; ऐसी परिस्थितियों में पले अन्य पशुओं की तरह इनके खुर भी नरम रहते हैं और फैलने की प्रवृत्ति रखते हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 12 | पीडीएफ पृ. 25.

## प्रजनन क्षेत्र

यह नस्ल दक्षिणी मराठा क्षेत्र के अनेक भागों में मिलती है, पर इसका विशेष प्रजनन कृष्णा नदी की घाटी में होता है। लेखक इचलकरंजी, कोल्हापुर, सांगली, मिरज, कुरुंदवाड़, रामदुर्ग, जामखंडी और मुधोल राज्यों का उल्लेख करता है। इसके अतिरिक्त बेलगाम जिले के अथणी और चिकोडी तालुकों में, सतारा जिले के दक्षिणी भागों में तथा कृष्णा नदी से लगे बीजापुर जिले के कुछ भागों में भी इसका कुछ प्रजनन होता था।

धारवाड़ जिले में इसके पशु काफी बार मिलते थे और शोलापुर तथा पूना जिलों में कभी-कभी दिखाई देते थे, किंतु लेखक स्पष्ट करता है कि इन स्थानों पर उनका प्रजनन नहीं होता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 12 | पीडीएफ पृ. 25.

## नस्ल के निर्माण के बारे में लेखक का विवरण

लेखक के अनुसार कृष्णा वैली नस्ल कई बड़े प्रकार के गोवंशों के मिश्रण से बनी। उसके मत में इसके निर्माण में सबसे प्रमुख भूमिका मद्रास की नेल्लोर अथवा ओंगोल नस्ल की रही। कहा जाता था कि इस नस्ल के पशु बहुत वर्ष पहले यहाँ लाए गए और स्थानीय तथाकथित 'गांवटी' (गांवटी) गोवंश से उनका संकरण किया गया। कृष्णा घाटी का यह स्थानीय गांवटी गोवंश दक्कन के ऊँचे पठारी भागों में सामान्यतः मिलने वाले स्थानीय पशुओं की तुलना में बड़ा और बेहतर बताया गया है।

इस प्रथम संकरण से प्राप्त पशुओं को फिर नेल्लोर सांडों से मिलाया गया और लेखक इसी क्रम से कृष्णा वैली प्रकार के बनने की बात रखता है। बाद में समय-समय पर दूध के उद्देश्य से सुरती या काठियावाड़ी गायें भी कृष्णा घाटी में लाई गईं, क्योंकि कृष्णा वैली गायें कम दूध देने वाली थीं। इन गायों को स्थानीय सांडों से मिलाने के कारण उनका प्रभाव भी नस्ल पर पड़ा।

इसी आधार पर लेखक कृष्णा वैली को किसी भी अर्थ में शुद्ध नस्ल नहीं मानता। उसके अनुसार इस प्रकार बनी नस्ल में बहुत सावधानी से चयन तथा किसी निश्चित मानक के अनुसार प्रजनन न होने के कारण प्रकार स्थिर नहीं है। वास्तव में पशुओं में बहुत व्यापक भिन्नताएँ मिलती हैं; इसलिए लेखक सावधानीपूर्वक कहता है कि इस नस्ल का कोई भी वर्णन केवल कम या अधिक सीमा तक ही सही माना जा सकता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 12 | पीडीएफ पृ. 25.

## सामान्य आकार

कृष्णा वैली बड़े आकार की नस्ल है। अच्छे सांड या बैल की कुकुद के पीछे ऊँचाई 50–58 इंच (लगभग 127.0–147.3 सेमी) और छाती का घेरा 70–83 इंच (लगभग 177.8–210.8 सेमी) बताया गया है। अच्छी गाय की कुकुद के पीछे ऊँचाई 49–56 इंच (लगभग 124.5–142.2 सेमी) तथा छाती का घेरा 69–80 इंच (लगभग 175.3–203.2 सेमी) बताया गया है।

| पशु | कुकुद के पीछे ऊँचाई | छाती का घेरा |
|---|---|---|
| अच्छा सांड / बैल | 50–58 इंच (127.0–147.3 सेमी) | 70–83 इंच (177.8–210.8 सेमी) |
| अच्छी गाय | 49–56 इंच (124.5–142.2 सेमी) | 69–80 इंच (175.3–203.2 सेमी) |

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 12–13 | पीडीएफ पृ. 25, 27.

# कृष्णा वैली सांड (Krishna Valley Bull)

स्रोत : K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate VIII)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## माप (इंच में)

| ककुड़ के शीर्ष तक ऊँचाई (Height to Top of Hump) | ककुड़ के पीछे ऊँचाई (Height Behind Hump) | शरीर की लंबाई (Length of Body) | शरीर का घेरा (Girth) | पिछली का घेरा (Shank Girth) |
|---|---|---|---|---|
| 63½ इंच | 55 इंच | 65 इंच | 74 इंच | — |

| सींग की लंबाई (Length of Horn) | चेहरे की लंबाई (Length of Face) | माथे की चौड़ाई (Width of Forehead) | कान की लंबाई (Length of Ear) |
|---|---|---|---|
| 9 इंच | 24 इंच | 9 इंच | 13 इंच |

नोट : यह छायाचित्र तथा माप सेकिटनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

# कृष्णा वैली गाय (Krishna Valley Cow)

स्रोत : K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate IX)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## माप (इंच में)

| ककुद् के शीर्ष तक ऊँचाई (Height to Top of Hump) | ककुद् के पीछे ऊँचाई (Height Behind Hump) | शरीर की लंबाई (Length of Body) | शरीर का घेरा (Girth) | पिडली का घेरा (Shank Girth) |
|---|---|---|---|---|
| 52 इंच | 49 इंच | 60½ इंच | 70 इंच | 6½ इंच |

| सींग की लंबाई (Length of Horn) | चेहरे की लंबाई (Length of Face) | माथे की चौड़ाई (Width of Forehead) | कान की लंबाई (Length of Ear) |
|---|---|---|---|
| 14½ इंच | 21 इंच | 8 इंच | 10 इंच |

नोट : यह छायाचित्र तथा माप लेकिटनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

## रंग और सिर

रंगों में काफी विविधता मिलती है। सफेद और धूसर संभवतः सबसे प्रमुख रंग हैं, किंतु मिश्रित या टूटे हुए रंग भी असामान्य नहीं हैं। इनमें शरीर पर काले या भूरे धब्बे अथवा चकत्ते लिए सफेद रंग को लेखक संभवतः सबसे सामान्य बताता है।

सिर भारी और चेहरा मध्यम लंबाई का है। माथा चौड़ा और उभरा हुआ है, जिससे पूरे सिर का भारीपन और अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। मुखाग्र बड़ा और काला है। सींग छोटे, मोटे, चपटे और कुंद हैं; वे ललाट-अस्थि के काफी पार्श्व भाग से निकलकर बाहर और थोड़ा ऊपर की ओर जाते हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 13 | पीडीएफ पृ. 27.

## कान, आँखें, गर्दन और अग्रभाग

कान लंबे और लटकते हुए हैं तथा उनके भीतर प्रायः पीला-सा रंग दिखाई देता है। आँखें बड़ी, भरी हुई और गहरे रंग की हैं और उनका भाव शांत तथा विनम्र बताया गया है। आँख सिर के कुछ पार्श्व भाग की ओर स्थित है और पलकें झुर्रीदार हैं।

गर्दन छोटी दिखाई देती है और मोटी, भारी तथा बहुत मांसल है। सांड में कुकुद बहुत बड़ा है, जबकि गाय में अपेक्षाकृत कम विकसित है। गलकम्बल बहुत बड़ा और लटकता हुआ है। इसके साथ ढीली त्वचा की एक तह आगे के पैरों के बीच से लटकते हुए सांड के अत्यधिक विकसित लिंगावरण तक जाती है। गाय में उसी स्थान पर पेट की ओर लटकती त्वचा की तह होती है।

छाती चौड़ी, गहरी और विशाल है। पीठ और कमर चौड़ी तथा समतल हैं और कूल्हों की ओर कुछ ऊपर उठने की प्रवृत्ति है। पिछला भाग लंबा है और उसमें नीचे की ओर झुकने की प्रवृत्ति बहुत कम है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 13 | पीडीएफ पृ. 27.

## पूँछ, पैर, हड्डियाँ और समग्र रूप

पूँछ लंबी, महीन और क्रमशः पतली होती जाती है; उसके अंत का बालों का गुच्छा कई बार लगभग जमीन तक पहुँचता है। पैर शरीर पर अच्छी तरह स्थित हैं। भुजाएँ, अग्रबाहु, जाँघें और विशेष रूप से पिछले पैर का निचला मांसल भाग (पिछली जाँघें) अच्छी तरह विकसित तथा मांसल बताया गया है।

नली की हड्डियाँ छोटी, चपटी और बड़ी हैं तथा हड्डी की गुणवत्ता अच्छी है। खुर सामान्यतः अच्छे आकार के हैं, किंतु वृद्ध पशुओं में उनके फैलने की प्रवृत्ति होती है। खुर का कठोर सींगनुमा भाग काला है। लेखक समग्र रूप को विशाल, भारी और सुस्त बताता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 13 | पीडीएफ पृ. 27.

## दुग्ध-क्षमता और प्रजनन

कृष्णा वैली गायों को लेखक कम दूध देने वाली बताता है। पूर्ण दुग्धावस्था में वे पूरे दिन में लगभग 6 पाउंड (लगभग 2.7 किलोग्राम, भार के रूप में) दूध देती थीं। उन्हें सुबह और शाम दुहा जाता था।

वे लगभग 18 महीने में एक बछड़ा देती थीं और प्रजनन में पर्याप्त नियमित बताई गई हैं। बछिया लगभग 3 वर्ष की आयु से प्रजनन शुरू करती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 13 | पीडीएफ पृ. 27.

## पशुपालक, झुंड और चराई की सीमा

इन पशुओं का प्रजनन संपन्न कृषक करते थे। सामान्यतः एक कृषक के पास केवल 2 या 3 गायें होती थीं और वह युवा पशुओं को अपनी आवश्यकता के लिए पालता था। एक ही व्यक्ति के स्वामित्व वाले बड़े झुंड नहीं मिलते थे और पेशेवर प्रजनक इस नस्ल को नहीं रखते थे।

कृष्णा घाटी की भूमि सामान्यतः इतनी समृद्ध और उपजाऊ थी कि घास उगाने की तुलना में खेती अधिक लाभकारी मानी जाती थी; इसलिए चराई की भूमि बहुत सीमित थी। फिर भी नदी-किनारे ऐसे कुछ कुरण और चरागाह थे जो बाढ़ की चपेट में आने के कारण खेती के लिए उपयुक्त नहीं थे। इन स्थानों पर बड़े होने वाले बबूल के वृक्षों के समूह सामान्यतः अच्छी छाया देते थे।

अधिकांश कुरण घास काटने के लिए सुरक्षित रखे जाते थे और घास काटकर ले जाने के बाद ही पशुओं को उनमें छोड़ा जाता था। फिर भी ये कुरण और चरागाह पशुओं के पालन का मुख्य आधार नहीं थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 13–14 | पीडीएफ पृ. 27–28.

# कृष्णा वैली बैल (Krishna Valley Bullock)

स्रोत : K, Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate X)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

## माप (इंच में)

| ककुद् के शीर्ष तक ऊँचाई (Height to Top of Hump) | ककुद् के पीछे ऊँचाई (Height Behind Hump) | शरीर की लंबाई (Length of Body) | शरीर का घेरा (Girth) | पिडली का घेरा (Shank Girth) |
|---|---|---|---|---|
| 60½ इंच | 58 इंच | 68½ इंच | 78 इंच | 6 इंच |

| सींग की लंबाई (Length of Horn) | चेहरे की लंबाई (Length of Face) | माथे की चौड़ाई (Width of Forehead) | कान की लंबाई (Length of Ear) |
|---|---|---|---|
| 12½ इंच | 22 इंच | — | — |

नोट : यह छायाचित्र तथा माप लेफ्टिनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

## बाड़े पर आधारित पालन और आहार

कृष्णा वैली नस्ल को लेखक बड़े पैमाने पर बाड़े में रखकर पाली जाने वाली नस्ल बताता है। उसका मुख्य आधार ज्वार की कड़बी थी, जो प्रजनन क्षेत्र में अच्छी गुणवत्ता और बड़ी मात्रा में पैदा होती थी। कड़बी के अतिरिक्त कुछ सांद्र आहार दिया जाता था, मुख्यतः कपास-बीज, तेल-खली और चुनी।

वर्ष के कुछ मौसमों में हरा चारा—जैसे हरी कड़बी और मक्का—प्रतिदिन बड़ी मात्रा में दिया जाता था। मूंगफली के पत्ते और तने भी कुछ मौसमों में खिलाए जाते थे। कामकाजी बैलों को असाधारण रूप से अच्छा भोजन दिया जाता था; ऊपर बताए चारे के अतिरिक्त बाजरे या ज्वार का आटा, गुड़, घी अथवा तेल और मसाले मिलाकर दिए जाते थे।

गाँव के पशु दिन में एक झुंड के रूप में चरते थे, किंतु रात में वापस लाकर उन्हें आश्रय/बाड़े में रखा जाता और कड़बी खिलाई जाती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14 | पीडीएफ पृ. 28.

## गाँव के 'पोल' सांड

कई गाँवों में स्थानीय देवताओं को समर्पित 'पोल' सांड होते थे। लेखक के अनुसार ये सामान्यतः नस्ल के अच्छे नमूने होते थे और उपयोगी उद्देश्य पूरा करते थे। गाँव का पोल सांड चरते समय झुंड के साथ रहता और ऋतु में आई गायों से प्रजनन करता था।

इन पोल सांडों को जहाँ चाहें जाने और खड़ी फसलों में खाने की छूट थी। खेत का मालिक अधिकतम इतना कर सकता था कि उन्हें अपने खेत से हाँककर बाहर कर दे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14 | पीडीएफ पृ. 28.

## बधियाकरण और काम की शुरुआत

युवा नर पशुओं का 1–3 वर्ष की आयु के बीच स्थानीय प्रचलित तरीके से शुक्र-रज्जु को दबाकर बधियाकरण किया जाता था। बधियाकरण के बाद बैलों को हल्के काम में लगाया जाता था, किंतु सामान्यतः 3 वर्ष की आयु से पहले नहीं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14 | पीडीएफ पृ. 28.

## मेले, उपलब्धता और वितरण

कृष्णा वैली पशु कोल्हापुर राज्य के चिंचली मेले में खरीदे जा सकते थे, जो सामान्यतः फरवरी में लगता था। इस नस्ल के पशु कभी-कभी म्हसवड़, शोलापुर और मंगसुली के मेलों में भी मिल सकते थे; किंतु वितरण का मुख्य केंद्र चिंचली मेला ही बताया गया है।

इस नस्ल की गाय प्राप्त करना बहुत कठिन था, क्योंकि प्रजनक सामान्यतः उन्हें अपने पास रखते थे और केवल वृद्ध, बाँझ या अन्यथा अनुपयोगी होने पर ही छोड़ते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14 | पीडीएफ पृ. 28.

## 1912 में दर्ज कीमतें

लेखक बताता है कि कीमतों में काफी अंतर था। अच्छी श्रेणी के 3–5 वर्ष के कृष्णा वैली सांड या बैल के लिए ₹200–₹225 प्रति पशु को उचित औसत कीमत बताया गया है। असाधारण रूप से उत्तम बैल ₹300–₹450 प्रति पशु तक आँके जाते थे, किंतु इन ऊँची कीमतों पर बहुत कम पशुओं का हाथ बदलता था।

अच्छी कृष्णा वैली गाय की कीमत ₹75–₹150 बताई गई है, पर ऐसी गाय मिलना बहुत कठिन था। 1–2 वर्ष की आयु के सर्वोत्तम प्रकार के नर पशु सामान्यतः उपलब्ध नहीं होते थे क्योंकि प्रजनक उन्हें अपने पास रखना पसंद करते थे; इसी आयु के मध्यम श्रेणी के पशु ₹75–₹80 तक मिलते थे।

बहुत आकर्षक और अत्यंत उत्तम बैलों की जोड़ी के लिए कभी-कभी 'असाधारण ऊँची कीमतें' दिए जाते थे और लेखक लिखता है कि ऐसी जोड़ियों के लिए ₹1,000 या ₹1,200 तक दिए जाने की बात कही जाती थी।

| पशु / श्रेणी | मूल रिपोर्ट में दर्ज कीमत |
|---|---|
| अच्छी श्रेणी का 3–5 वर्ष का सांड या बैल | ₹200–₹225 प्रति पशु |
| असाधारण रूप से उत्तम बैल | ₹300–₹450 प्रति पशु |
| अच्छी गाय | ₹75–₹150 |
| 1–2 वर्ष का मध्यम श्रेणी का नर पशु | ₹75–₹80 |
| अत्यंत उत्तम बैलों की जोड़ी—कभी-कभी दर्ज विशेष कीमत | ₹1,000–₹1,200 तक |

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 14–15 | पीडीएफ पृ. 28, 31.

## गहरी काली मिट्टी में कार्य-क्षमता

स्थानीय गहरी काली मिट्टी में उत्कृष्ट कार्य-क्षमता के कारण इस नस्ल को बहुत महत्व दिया जाता था। ऐसी भूमि में आवश्यक गहरी जुताई के लिए बहुत भारी खिंचाई वाले पशुओं की जरूरत पड़ती थी। लेखक के अनुसार कृष्णा वैली की 1 जोड़ी वह काम कर सकती थी जिसे छोटे पशुओं की 3–4 जोड़ियाँ भी कठिनाई से कर पातीं।

इसके साथ वह यह भी जोड़ता है कि इन पशुओं के रख-रखाव और देखभाल की लागत इतनी अधिक थी कि संपन्न लोगों के अलावा अन्य लोगों के लिए उनका उपयोग कठिन था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 15 | पीडीएफ पृ. 31.

## ब्राज़ील और अमेरिका की ओर निर्यात

लेखक दर्ज करता है कि उस समय इस नस्ल के पशुओं को हाल में ब्राज़ील और अमेरिका के अन्य राज्यों में वहाँ के स्थानीय गोवंश से संकरण के उद्देश्य से निर्यात किया गया था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 15 | पीडीएफ पृ. 31.

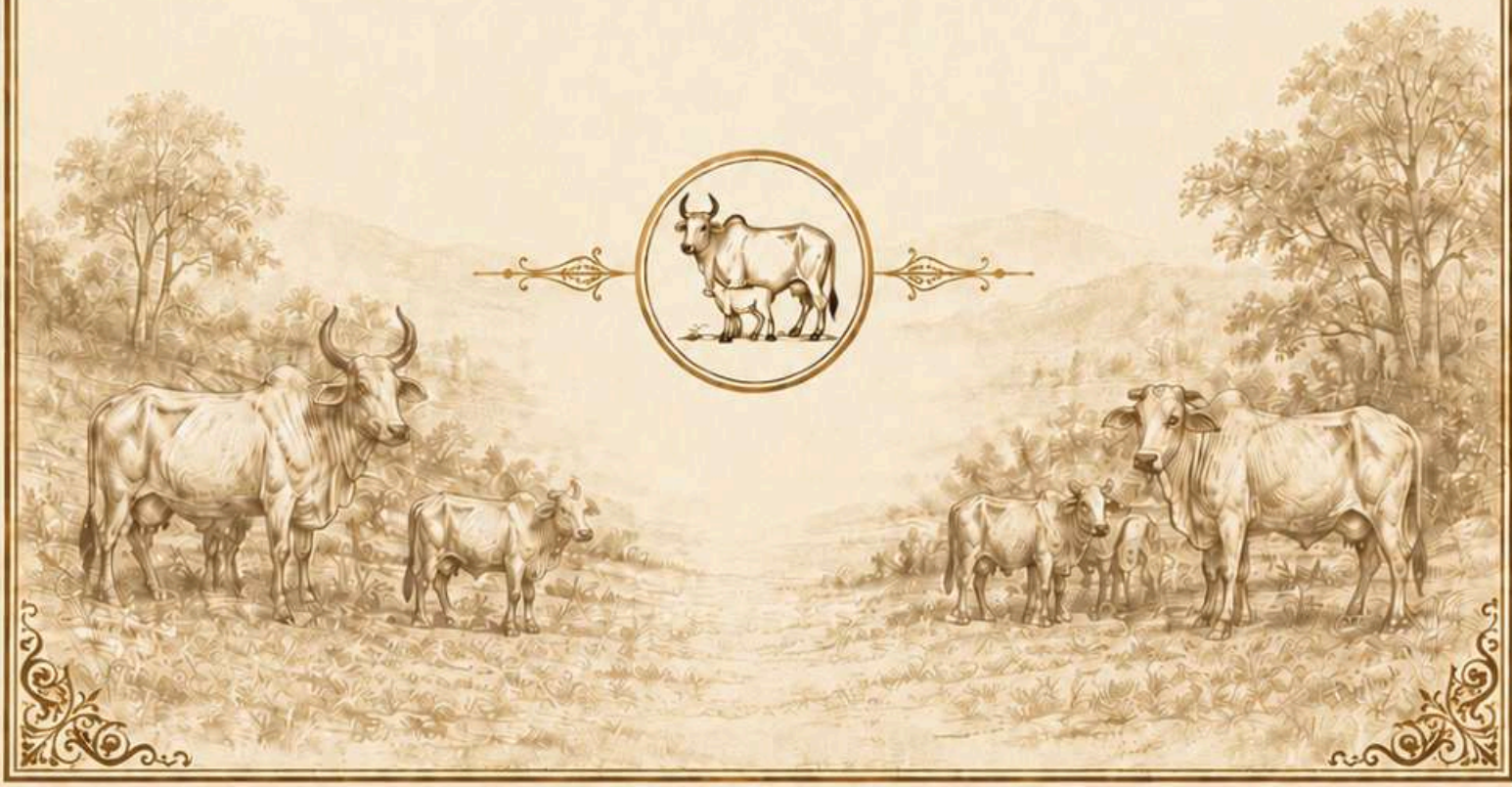

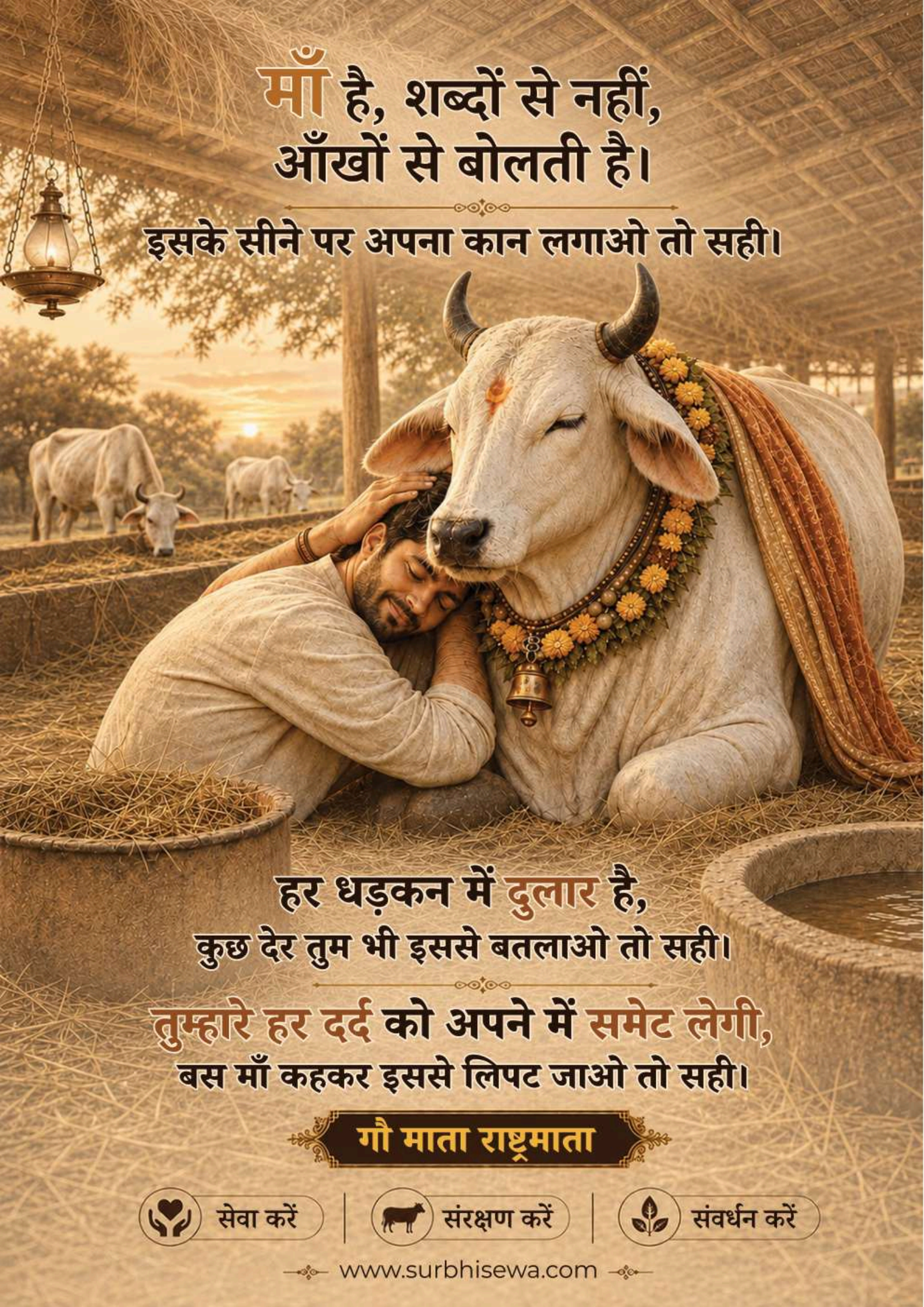
माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com